25

मानव व्यवहार की मूल मनोवैज्ञानिक अवधारणाएं

* *गायत्री*

प्रस्तावना

प्रायः यह सभी जानते हैं कि समाज व्यक्तियों से बनता है। मनोवैज्ञानिकों ने मनोवैज्ञानिक घटक और मानव व्यवहार पर उनके प्रभावों को अध्ययन किया है। यहाँ हम उनके कुछ विशिष्ट मनोवैज्ञानिक अवधारणाओं का उल्लेख कर रहे हैं। जो मानव व्यवहार के अध्ययन से सम्बन्धित हैं।

किसी वस्तु और स्थिति के अनुसार उसका जवाब देना व्यक्ति की मनोवृत्ति होती है। व्यक्ति के लिए मनोवांछित कोई वस्तु मूल्यवान होती है। पूर्वाग्रह भी एक तरह की मनोवृत्ति होती है। व्यक्ति के लिए मनोवांछित कोई वस्तु मूल्यवान होती है। पूर्वाग्रह भी एक तरह की मनोवृत्ति है। पूर्वाग्रह एक व्यक्ति को पहले से ही समूह अथवा उसके सदस्यों के प्रति उपयुक्त अथवा अनुपयुक्त तरीके से सोचने, समझने अनुभव व कार्य करने की स्थिति प्रदान कर देता है।

सीखना एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम अपने प्रतिउत्तर नए व्यवहार के प्रति संगठित करते हैं। सीखना चेतना और उत्तेजना के बीच साहचर्य बनाने का कार्य करती है। सीखने को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है "सीखना एक स्थाई परिवर्तन है जो व्यवहार और अनुभव से आता है" याद्दाश्त दो प्रकार की होती है। जब हम किसी नाम या तारीख को याद करते हैं। तो उसे "शाब्दिक या मौखिक याद्दाश्त" कहते हैं और जब हम किसी कार चालक की कई वर्षों के अन्तराल के बाद चलाने की तकनीक को याद करते हैं तो उसे पेशीय या प्रेरक याद्दाश्त कहते हैं। प्रेरक या चालक याद्दाश्त की अपेक्षा शाब्दिक या मौखिक यादाश्त बुद्धि पर अधिक जोर देकर उसका उपयोग करती है। इस याद्दाश्त के चार स्वरूप होते हैं : (1) स्थिरीकारण या अभिग्रहण (2) स्मरण (3) पुनःस्मरण (4) मान्यता। प्रत्यक्षज्ञान वह व्यवस्थिति प्रक्रिया है

---

* *डॉ. गायत्री, काशी विद्यापीठ, वाराणसी*

जिससे हम वस्तुओं की सही पहचान कर लेते हैं जैसे वृक्ष, आदमी, मकान आदि। दूसरों के संदर्भ में सामाजिक ज्ञान हमें मूल रूप में उनसे प्राप्त सूचनाओं के द्वारा प्राप्त होता है।

रूढ़िगत व्यवहार अक्सर पूर्वाग्रहपूर्ण मनोवृत्ति का परिणाम होता है जिसे परिभाषित किया जा सकता है कि – ''यह समूह के सदस्यों का एक लिखित गरिमापूर्ण सरलीकृत विश्वास या विचार है।

प्रेरणा वह आन्तरिक मनोवैज्ञानिक स्थिति है जो क्रियाशीलता को बनाए रखने की प्रवृत्ति की तरफ पहल करती है।

अब हम इस अध्याय में इनमें से कुछ मुख्य मनोवैज्ञानिक अवधारणाओं की संक्षिप्त चर्चा करेंगे।

अभिवृत्ति और मूल्य

प्रकृति या स्वरूप

अभिवृत्ति वह काल्पनिक संरचना है जो किसी व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करती है। वह किसी पक्ष एवं स्थिति को नियंत्रित करती है जो उस मनोवृत्ति से सम्बन्धित होती है। मनोवृत्ति के तीन भाग होते हैं।

1) भावात्मक आयाम (मनोवृत्ति मूलक पक्ष को व्यक्ति कितना अधिक पसन्द अथवा नापसन्द करता है)।

2) ज्ञानात्मक आयाम (सोचना, यादाश्त, निर्णय आदि) (किसी अभिवृत्तिजन्य पक्ष के बारे में व्यक्ति कैसा विश्वास करता है)।

3) व्यवहार सम्बन्धी आयाम (अभिवृत्ति मूलक पक्ष के साथ व्यक्ति कैसा कार्य करता है) किसी चीज के प्रति हमारी पसन्द अथवा नापसन्द बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करती है कि उसके प्रति हमारा व्यवहार कैसा है। जो वस्तु हमें पसन्द आती है उसकी तरफ हमारा झुकाव होता है, उसे पाने की चेष्टा करते हैं या उसके साथ जुड़ने का प्रयास करत हैं। मनोवृत्ति सामान्य तौर पर इस बात की अभिव्यक्ति है कि हम विभिन्न वस्तुओं को कितना अधिक पसन्द या नापसन्द करते हैं। अभिवृत्ति हमारे मूल्यांकन का प्रतिनिधित्व एवं विविध प्रकार के पक्षों की प्राथमिकता निर्धारित करती है। यह सूचनाओं पर आधारित है। उदारहण

स्वरूप कुछ लोग प्राण दण्ड को खास तौर से अपराध रोकने का तरीका दण्ड देने के लिए उचित मानते हैं। परन्तु कुछ लोग जो इसका विरोध करते हैं। वैसी सजा को नृशंस और अपराध के निरोध का तरीका नहीं मानते हैं जब तक हमें किसी विशेष अभिवृत्ति पक्ष की सभी जानकारियाँ नहीं प्राप्त होती हैं हमारी अभिवृत्ति पुनरावृत्त हेतु सदैव उपस्थिति रहती है। अभिवृत्ति परिवर्तन के जीवन में पर्याप्त अवसर होते हैं। अभिवृत्ति कई चीजों में लागू हो सकती है। अभिवृत्ति के कई पक्ष विद्यमान हो सकते हैं: यथा, व्याख्यान, दुकान, व्यक्ति, प्रधानमंत्री, अध्यापक, मित्र) या भावात्मक विचार (न्याय, **मानवाधिकर मैत्रीभाव**) इत्यादि। कोई चीज जो कि निर्धारित भावनाओं का उत्तेजित करती है एक अभिवृत्ति पक्ष है। अभिवृत्ति किसी भी विश्वास या सम्मति से भिन्न है। किसी वस्तु की विशेषता के बारे में विश्वास एक अनुभूति है। कल्पना कीजिए आपके मित्र ने किसी प्रधानमंत्री पद के दावेदार के प्रति अनुकूल टिप्पणी की यह दृष्टिकोण प्रायः उस दावेदार के प्रति विश्वास से संबन्धित है एवं ऐसा व्यक्ति जो एक उचित सामाजिक सुरक्षा नीति रखता है; कि वह गरीबों के लिए कार्य करेगा; अपने पड़ोसी देशों से मधुर संबन्ध विकसित करेगा इत्यादि। विश्वास या राय का निर्धारण इस बात से होता है कि वह कितनी सत्य प्रमाणित होती है। विश्वास के बारे में हमारी मूल्यांकित भावनाएँ हमारे दृष्टिकोण में योग देती है। अभिवृत्ति का वैज्ञानिक अध्ययन में मापन की आवश्यता होती है। अभिवृत्ति मापने की कई तकनीकें होती हैं। अभिवृत्ति अभिवृत्ति मापन की सर्वाधिक सामान्य विधि है।

अभिवृत्ति परिवर्तन का प्रभाव

दैनिक जीवन में अभिवृत्ति के रचना एवं परिवर्तन जीने की सत्त प्रक्रिया का अंग है। अभिवृत्ति रचना एवं परिवर्तन वर्तमान अन्तर्वैयक्तिक संबध के संदर्भ में घटित होता है। समूह सदस्यता एवं विशष्ट स्थिति अलग–अलग समयावधियों को जोड़ते हैं। कभी–कभी अभिवृत्ति परिवर्तन की यह सीमा चरम पर होती है। अक्सर समूह द्वारा इस बदलाव को नाटकीय रूप दे दिया जाता है, जब इसे जबरदस्ती प्रोत्साहित किया जाता है। अभिवृत्ति के चरमपरिवर्तन के लिए बल प्रयोग की आवश्यकता नहीं पड़ती। अभिवृत्ति परिवर्तन प्रक्रिया में लिप्त मूल तथ्यों की पहचान संभव है। अभिवृत्ति परिवर्तन से जुड़ी मौलिक इकाई क्रम; सामाजिक प्रभाव से जुड़ी इकाई के काफी समान होती है। सामाजिक कुप्रभाव को एक अभिकर्ता के रूप में दर्शाया जा सकता है जो मुख्य

स्थान पर एमकम व्यक्तियों के साथ हस्तक्षेप करता है। अभिवृत्ति परिवर्तन किसी श्रोत से न्यूनतम संलिप्त होता है जो मुख्य जगह एकम व्यक्तियों का संदेश भेजता है।

अभिवृत्ति परिवर्तन में मौलिक क्रमः प्राप्तकर्ता की उस अवस्था को दर्शाने हेतु संदेश भेजने वाले श्रोत से जुड़ा होता है, जिसे पहले संदेश भेजा गया। एक अभिवृत्ति परिवर्तन का स्वरूप क्रम वस्तुतः प्रभाव क्रम के स्वयं के समरूप ही है। अभिवृत्ति परिवर्तन को बढ़ाने की विशेषताओं में उच्च प्रमाणिकता और आकर्षण का होना आवश्यक है। आकर्षणशीलता सांसारिक प्रत्यक्षीकृत या पानेवाले के सादृश्य हो सकती है। सुझाव, भय के प्रति अनुरोध और एकपक्षीय बनाम द्विपक्षीय संदेश, की विशेषताएँ अभिवृत्ति परिवर्तन को प्रभावित करते हैं।

सभी व्यक्ति किसी भी संदेश का एक ही तरह का उत्तर नहीं देते हैं। कुछ लोग दूसरों की अपेक्षा आसानी से प्रभावित हो जाते हैं। किसी संदेश का किसी विशेष प्राप्तकर्ता के ऊपर क्या प्रभाव पड़ता है वह इस बात पर निर्भर करता है कि वह संदेश प्राप्तकर्ता के ऊपर क्या प्रभाव पड़ा है वह इस बात पर निर्भरता करता है कि वह संदेश प्राप्तकर्ता की स्थिति से कितना भिन्न है और उसका रक्षात्मक अनुभव इस स्थिति से कितना सम्बन्ध रखता है। यह सर्बमान्य है कि अभिवृत्ति व्यवहार से निर्देशित होती है। लेकिन कई बार यह भी देखा गया है कि व्यक्ति की अभिवृत्ति और उसके व्यवहार में कोइ मेल नहीं है। कुछ खास स्थिति में अभिवृत्ति से व्यवहार का पूर्वानुमान लगाया जा सकता है। ऐसी स्थिति में, अभिवृत्ति मापन एवं प्रेक्षित व्यवहार में अनुरूपता के बीच अभिवृत्ति की संरचना में प्रत्यक्ष अनुभव की उपस्थिति और इसकी प्रासंगिकता उस व्यक्ति के प्रक्षेपित व्यवहार के लिए श्रेष्ठ माना जाता है।

मूल्य हमारे जीवन को उद्देश्यपूर्ण बनाने एवं निर्देशन देने का कार्य करते हैं। ये मूल्य व्यक्तियों की इच्छाओं के अनुसार कुछ भी हो सकते हैं। जब मूल्य सामाजिक रूप से प्रतिबन्धित होता है और दूसरों की प्रतिक्रिया के फल स्वरूप पैदा होता है तो इसे आवश्यकता के नाम से जाना जाता है। एक ऐसा विचार जिसमें आवश्यकता दूसरों के लिए पूर्वकल्पित हो सकती है और उसके मार्ग को निर्देशित रखती है। उदाहरण के लिए हमें किसी न किसी वस्तु की आवश्यकता होती है। क्योंकि उनका सामाजिक मूल्य होता है या वे प्रतिष्ठापरक होती हैं। व्यक्ति के कुछ मूल्य उसके जीवन की पूर्व धारणा की ओर निर्देशित करता है। ये पूर्वधारणाएँ और इसके किसी भी व्यक्ति के व्यवहार को निर्देशित करते हैं। इस प्रकार वे व्यक्ति के जीवन को प्रासंगिक, सम्बद्ध एवं उद्देश्यपूर्ण बना देते हैं। इसे क्रमबद्ध रूप से इस तरह देखा जा सकता है कि

व्यवस्थित महत्व के स्थान पर उससे श्रेष्ठमहत्व को प्राथमिकता दी जाती है। किसी व्यक्ति के सोपान्नात्मक महत्व और उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व के बीच के सम्बन्ध का पता लगाना अभी शेष है। जब हम किसी व्यक्ति के सोपानात्मक महत्व के बारे में जानने का प्रयास करते हैं तब हमें यह ज्ञात होता है कि वह व्यक्ति कितना महत्वपूर्ण है। व्यक्ति जब आदतों एवं असंगत व्यवहार के बीच जीवन यापन करता है तो उसका सोपानात्मक महत्व अत्यधिक संकलित तथा व्यक्तित्व अत्यन्त संगठित हो जाता है। एक बच्चे का कार्य उसके परिवार के प्रभावी मूल्यों के द्वारा निर्मित होता है यह मूल्य नैतिक, धार्मिक, सामाजिक आदि होते हैं।

परिवारिक मूल्यों का प्रचलन बढ़ते हुए बच्चों को उनके वर्तमान और भविष्य के आचरण के स्पष्ट मार्गदर्शक होते हैं। जब कोई बच्चा अपने परिवार से भिन्न किसी अन्य परिवार के आदर्श और मनोवृत्ति के सम्पर्क में आता है तब उसे आभास होता है कि उसके मूल्यों को चुनौती मिल रही है। मूल्यों का मजबूत प्रेरणात्मक चरित्र होता है जो आकांक्षा और आवश्यकता के अनुरूप होता है। यद्यपि ये अविवादपूर्ण ढंग से सामाजिक आदर्शों और आकांक्षाओं तथा आवश्यकता के अनुरूप होता है। यद्यपि अविवादपूर्ण ढंग से सामाजिक आदर्शों व आकांक्षाओं से प्रभावित हैं और प्रत्येक व्यक्ति में इसका रूप बदलता रहता है। यह विभिन्नता उसके सामाजिक उद्दीपन की प्रतिक्रिया में परिवर्तित दिखाई देती है। समूह में आदर्श की अभिव्यक्ति को एक प्रभावी स्तर मौजूद होता है और प्रत्यक व्याक्त में इसका रूप बदलता रहता है। यह विभिन्नता उसके सामाजिक उद्दीपन की प्रतिक्रिया में परावर्तित दिखाई देती है। समूह में आदर्श की अभिव्यक्त का एक प्रभावीस्तर मौजूद होता है। मूल्य, समूह में सार्वभौम और व्यक्तिगत रूप से अद्वितीय होता है। यह सार्वभौम इसलिए है कि समूह के सभी सदस्यों को आदेश के अनुरूप व्यवहार करना पड़ता है। ये मूल्य अद्वितीय इस आशय से हैं कि प्रत्येक व्यक्ति इसे अपने ज्ञान के आधार पर अपनाता है। व्यक्ति अपने आप और अन्य अपने इसी मूल्यक्रम के आलोक में देखता है। अध्ययनों से यह ज्ञात होता है कि व्यक्ति सैद्धान्तिक मूल्यक्रम से अभिप्रेरित होकर स्वयं को दार्शनिक, तार्किक या वैज्ञानिक तत्व की खोज में लगा देता है। वह ज्ञान प्राप्ति की आवश्यकता से अभिप्रेरित होता है। राजनीतिज्ञ दूसरों पर शासन करने के प्रयोजन से संचालित होते हैं। अर्थशास्त्री द्रव्य की प्राप्ति के लिए प्रोत्साहित होता है। सामाजिक व्यक्ति सहानुभूति से अभिप्रेरित होकर दूसरों से भावात्मक सम्बन्ध बनाने के लिए जुड़ा रहता है। सौन्दर्यशास्त्री इन्द्रिय सम्बन्धी अनुभव से ही संतुष्टि प्राप्त करता है जैसे सौन्दर्य, अंगसंयोग में सामंजस्य आदि। मूल्यों की पास्परिक क्रिया के माध्यम से अभिवृत्ति को जाना जा सकता है। अभिवृत्ति और मूल्य बहुत हद तक मानव व्यवहार का अविभेद

पक्ष है। ये व्यक्ति को उसके/उसकी सामाजिक वास्तविकता के समायोजन के लिए निर्देशित करते हैं। अभिवृत्ति एवं मूल्यों द्वारा व्यक्ति के सामाजिक व्यवहार और उसके व्यक्तित्व का निर्माण किया जा सकता है।

पूर्वाग्रह

पूर्वाग्रह एक प्रवृत्ति है जो व्यक्ति को अपने समूह के सदस्यों के अनुकूल या प्रतिकूल सोचने, देखने, महसूस करने या अनुकरण करने के तरीके की तरफ उद्यत करती है। पूर्वाग्रही व्यक्ति वास्तव में अपनी प्रवृत्ति के अनुसार व्यवहार करते हैं कि नहीं यह परिस्थितयों और अन्य कारकों पर निर्भर करता है। पूर्वाग्रह शब्द व्यक्ति की आन्तरिक सोच, क्षमता और अनुभव तथा प्रत्यक्ष ज्ञानात्मक, प्रज्ञाशक्ति और संवेगात्मक प्रकरण पर दबाव बनाता है। इससे कदापि यह अर्थ नहीं निकलता कि ऐसे अनुभवों से व्यवहार उपयोगी होता है।

पूर्वाग्रह शब्द लैटिन भाषा के प्रेजूडीसियम से लिया गया है। प्री का अर्थ पूर्व और जूडिसियम का अर्थ निर्णय होता है। पूर्वाग्रह किसी सदस्य की विशिष्टताओं को निर्दिष्ट नहीं करता वरन यह मुख्य रूप से समूह के सदस्यों के सकारात्मक या नकारात्क मूल्यांकन या निर्णय से संदर्भित है। यह प्रायः कुछ सामाजिक नास्तिक या धार्मिक समूह के सदस्यों की नकारात्मक प्रवृत्ति को स्पष्ट करता है।

पूर्वाग्रह की विशेषताएँ

1) पूर्वाग्रह अभिवृत्ति का एक प्रकार है। यह अर्जित गुण है। एक नवजात शिशु अन्य जाति के लोगों के प्रति नकारात्मक या सकारात्मक पूर्वाग्रह नहीं रखता, परन्तु ज्यों ही उसे लोगों की जाति, वर्ग या धर्म के बारे में ज्ञान हो जाता है, पूर्वाग्रह विकसित होने लगता है।

2) पूर्वाग्रह एक सांवेगिक भावना है। यदि यह स्वीकारात्मक है तो व्यक्ति किसी भी जाति या वर्ग के प्रति प्यार या सद्भावना प्रदर्शित कर सकता है। यदि पूर्वाग्रह किसी अन्य नास्तिक या धार्मिक समूह के लोगों के प्रति नकारात्मक है तो यह शत्रुता, घृणा और क्रोध के रूप में परिवर्तित हो जाता है।

3) पूर्वाग्रह समूह को लक्ष्य की तरफ निर्देशित करता है। पूर्वाग्रह का लक्ष्य एक व्यक्ति नहीं वरन् सम्पूर्ण समूह होता है। अच्छे गुणों के बावजूद कोई व्यक्ति या किसी समूह का सदस्य एक दूसरे समूह के सदस्यों के साथ विशेष प्रकार का पूर्वाग्रह प्रदर्शित कर सकता है।

4) पूर्वाग्रह दृढ़ सामान्यीकरण पर आधारित है। **इसमें दृढ़ता पायी जाती है और यह अनमनीय सामान्यीकरण पर आधारित है। यद्यपि प्रमाणिक सूचनाओं की प्राप्ति के बाद भी व्यक्ति अपने पूर्वाग्रह नहीं बदल पाता/पाती हैं।**

5) पूर्वाग्रह वास्तविकता से सम्बन्धित नहीं है, **चाहे यह अनुकूल हो या प्रतिमूल। यह** हमारी परम्पराओं एवं प्रथाओं पर आधारित है।

पूर्वाग्रह के पाँच प्रमुख सिद्धान्त हैं: i) **सामाजिक शिक्षण के सिद्धान्त** जो विशेष रूप से व्यक्तिगत पूर्वाग्रह के साथ व्यवहार और पूर्वाग्रही व्यक्ति में अभिभावकों मित्रों और शिक्षकों आदि के द्वारा शिक्षण अनुभवों के कारणों का पता लगाता है, ii) **संज्ञानात्मक सिद्धान्त** जो संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं पर बल देता है जैसे–वर्गीकरण, प्रवाह और योजना, जो पूर्वाग्रही में योगदान करती है, iii) **अभिप्रेरणात्मक सिद्धान्त** जो पूर्वाग्रही व्यक्ति के व्यक्तित्व में पूर्वाग्रही की उत्पत्ति को देखने का प्रयास करता है, iv) **सामाजिक तादात्मय का सिद्धान्त** जो यह विश्लेषित करता है कि लोग सामाजिक जगत का किस तरह स्वसमूहों और परसमूहों में विभाजित करके सम्बद्ध परसमूहों से प्रतिष्ठानुरूप सम्मान प्राप्त करते हैं, v) **समूह संघर्ष का सिद्धान्त** जो पूर्वाग्रह की उत्पत्ति और विकास की प्रक्रिया को एक विशेष समाज, संस्कृति और समूह के साथ जोडता है।

पूर्वाग्रह को बनाये रखने में सहायक कारक तीन स्तरों पर संचालित होते हैं। ये स्तर हैं: i) सामाजिक संरचना, ii) वैयक्तिक गतिशील व्यक्तित्व, और iii) संस्कृति। **सामाजिक संरचना के कारक हैं** (क) पूर्वाग्रह के प्रतिमान की अनुकूलता (ख) अन्तः क्रिया प्रतिरूप (ग) नेतृत्व समर्थन (घ) पूर्वावरण आधार। वैयक्तिक गतिशील व्यक्तित्व के अंतर्गत (क) कुण्ठा, आक्रमण और (ख) आर्थिक व्यवस्था और प्रस्थिति प्राप्ति (ग) व्यक्तित्व की आवश्यकताएँ और (घ) निरंकुश व्यक्तित्व सांस्कृतिक कारकों के अंतर्गत (क) मूल्य और प्रतिमान (ख) बालक का सामाजीकरण और (ग) स्वसमूह बनाम परसमूह सदस्यता।

सामाजिक व्यवहार में पूर्वाग्रह का प्रभाव: सामाजिक व्यवहार में पूर्वाग्रह का प्रभाव सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरफ से पड़ता है। पूर्वाग्रह के सकारात्मक प्रभाव निम्नलिखित होते हैं : 1) यह व्यक्ति को उसकी दमित इच्छाओं की पूर्ति में सहायक होता है, 2) दूसरे समूहों पर आक्रामक होकर यह व्यक्ति को उसकी कुंठाओं से मुक्ति दिलाने में सहायता करता है, 3) पूर्वाग्रह की सहायता से समूह में श्रेष्ठता की भावना पैदा होती है जो उसकी प्रतिष्ठा की आवश्यकता को पूरी करती है।

पूर्वाग्रह के नकारात्मक प्रभाव निम्नलिखित हैं: 1) पूर्वाग्रह के कारण सामाजिक द्वन्द्व पैदा होता है, 2) इसके कारण सामाजिक विघटन होता है, 3) पूर्वाग्रह राष्ट्र की एकता में बाधक होता है।

शिक्षण

शिक्षण वह प्रक्रिया है जिसके परिणामस्वरूप शारीरिक और मानसिक गतिविधियाँ नए और परिवर्तित प्रतिक्रिया में निर्देशित होती हैं। शिक्षण के लिए सामान्य पूर्ववर्ती स्थिति एकल परीक्षण है या कई घंटे बेकार प्रयास करने पर आ सकता है। प्रयत्न और युक्ति की दीर्घता कार्य की कठिनाइयों के ऊपर निर्भर करता है। सीखने वाले व्यक्ति की परिपक्वता एवं दक्षता तथा समझदारी और अनुभव कार्य के लिए आवश्यक है। जब सही और उचित प्रति उत्तर प्राप्त हो जाता है तो परीक्षण काल समाप्त हो जाता है। उचित प्रति उत्तर वह है जो व्यवहार के सन्निकटता ला दे, खोज़ का अंत कर दे या समस्याओं का समाधान कर दे। जब प्रतिउत्तर की संतुष्टि होती है तो प्रबलीकरण होता है। एक बार जब प्रबलीकरण के करण कार्य का सिलसिला सही ढंग से स्थापित हो जाता है तो पुनरावृत्ति या व्यवहार, चाटुकारिता और दक्षता प्राप्त हो जाती है। पुनरावृत्ति; जो कुछ सीखा गया है उसके स्पष्टीकरण का एक अवसर प्रदान करती है और अच्छे संचालन में सहायता करती है। यह चुने हुए प्रत्युत्तरों को भी प्रबल बनाती है जब तक वे अच्छी आदतों के रूप में स्थापित नहीं हो जाते।

प्रकार

बहुगुणप्रत्युत्तर शिक्षण मानव जाति से सम्बन्धित है और इसकी प्रकृति अत्यन्त जटिल है। मुख्य रूप से तीन प्रकार के बहुगुणप्रत्युत्तर से व्यक्ति सीखता है। (1) संवेदी चालक शिक्षण (2) मौखिक शिक्षण (3) अवधारणा सम्बन्धी शिक्षण। अब हम संक्षेप में प्रत्येक के प्रमुख लक्षणों का वर्णन करेंगे।

मानव शिक्षण के क्षेत्र में, संदेवी चालक शिक्षण प्रतिबिम्बित चित्रांकन एवं अनुशरण शिक्षण को सहायता प्रदान करता है। इस विशिष्ट शिक्षण में व्यावसायिक क्रियाएँ महत्वपूर्ण होती हैं। ये व्यावसायिक क्रियाएँ संदेही अंगों द्वारा नियंत्रित होतीं है। विभिन्न क्षेत्रों में मानव द्वारा अर्जित कौशल इस प्रकार के शिक्षण के अंतर्गत आते हैं, यथा बाइसिकिल चलाना, पियानो बजाना, मशीन चलाना हवाई जहाज उड़ाना आदि।

मानव व्यवहार का मुख्य भाग मौखिक शिक्षण के अंतर्गत आता है। व्यावसायिक दक्षता की अपेक्षा मौखिक शिक्षण की मात्रा काफी अधिक होती है। मौखिक शिक्षण के

प्रायोगिक अध्ययन के लिए अर्थपूर्ण शब्दों का प्रयोग किया गया है। मौखिक सामग्री हेतु चार मुख्य तकनीकों का प्रस्तुतीकरण किया जाता है यथा मुक्त पुनः स्मरण, क्रमबद्ध शिक्षण एवं पुनःस्मरण, युगल सहभागी और मौखिक विवेचन प्रक्रिया।

प्रत्यक्ष शिक्षण मानव शिक्षण का अत्यधिक जटिल पहलू है। यह ऐसी भौतिक क्रियाओं से सम्बन्धित है जिसमें एक श्रेणी की चीजों को व्यापक नामों से जाना जाता है। प्रत्यक्ष निर्माण के बाद कोई उत्तेजक या उद्दीपक समूह किसी एक नाम से जाना जाता है। उदाहरण स्वरूप प्रत्यय शिक्षण के बाद हम किसी विशेषजाति के फल को "आम" और दूसरे को "केला" कहते है। यद्यपि प्रत्येक आम और केला एक दूसरे से भिन्न हो सकते हैं परन्तु बहुत सी सामान्य विशेषताओं के कारण वे एक विशेष नाम से जाने जाते हैं। प्रत्यय सामान्य विशेषताओं और वस्तुओं, व्यक्तियों एवं घटनाओं के बीच विभेदीकरण की एक प्रक्रिया है। प्रारम्भ से ही बालक में चिन्तन प्रक्रिया के कारण उसके/उसकी मस्तिष्क में प्रत्यय शिक्षण अपना स्थान सुनिश्चित कर लेता है। यह बालक के मस्तिष्क में नई चीजों के स्मपर्क में आने से विकसित होता है। प्रत्यय शिक्षण अनुभूतिकी प्रक्रिया, विश्लेषण, तुलना, काल्पनिक चिंतन एवं सामान्यीकरण से प्रभावित होता है।

शिक्षण प्रवर्तक कारक

1) शिक्षण के लिए विभिन्न मनोवैज्ञानिक कारक एवं तत्व आवश्यक हैं। ये तत्व मुख्यतया विभिन्न प्रकार की अभिप्रेरणा, पुरस्कार एवं दण्ड, परिणाम का ज्ञान, प्रतिस्पर्धा आदि हैं। ये तत्व शिक्षण के दौरान प्रबलीकरण की शक्ति पैदा करते हैं शिक्षण और अभिप्रेरणा एक दूसरे के सन्निकट हैं। सभी जीवित प्राणियों की शारीरिक आवश्यकताओं जैसे भूख, प्यास, निद्रा, यौन क्रिया आदि होती है। पशुओं से अलग मानव में कुछ प्रबल सामाजिक प्रेरकताएँ होती हैं। यही कारण है कि ये शारीरिक अभिप्रेरणा की अपेक्षा पुरस्कार जैसे सम्मान, प्रतिष्ठा एवं प्रशंसा से अत्यधिक प्रभावित होती हैं। प्रयोगों के द्वारा यह देखा गया है कि पुरस्कार शिक्षण को प्रभावित करता है। जब किसी भूखी बिल्ली को पुरस्कार के रूप में भोजन दिया जाता है तो वह सही राह पर चलना सीख जाती है। शिक्षण के क्षेत्र में दण्ड के रूप में भी प्रयोग किए गए हैं। इस प्रयोग में बिजली के झटके लगाए गए और पाया गया कि दण्ड के बाद भुटिया ठीक हो गई शिक्षण प्रक्रिया को परिणाम का ज्ञान भी प्रभावित करता है। जब कोई सीखने वाला/वाली यह समझ जाता/जाती है कि वह कुछ पा जायेगा तो उसकी क्रिया तेजी से प्रगति करती है। प्रतिस्पर्धा से भी शिक्षण की गति बढ़ जाती है इस स्थिति में सीखने वाला

यह सोचता है कि जल्दी सीख जाने से वह समाज में सम्मानित किया जायेगा/जायेगी। हम यह कह सकते हैं कि प्रतिस्पर्धा और सम्मान की सोच आन्तरिक अभिपेरणा के प्रकार्यता को बढ़ाती है।

2) शारीरिक कारकों का शिक्षण प्रक्रिया में अत्यन्त विशिष्ट स्थान होता है। सीखने वाले की शारीरिक दशा का उसके सीखने की प्रक्रिया पर प्रभाव पड़ता है पूर्ण रूप से विकसित शारीरिक अंग, स्वस्थ शरीर और मानसिक परिपक्वता शिक्षण प्रक्रिया को बढ़ाती है।

3) पर्यावरणीय कारकों का सीखने की प्रक्रिया को बढ़ावा देने में विशिष्ट योगदान होता है। शिक्षण प्रक्रिया को बढ़ाने में मौसम, तापक्रम, प्रकाश, ध्वनि और हवा का अत्यधिक योगदान होता है।

शिक्षण में बाधक कारक

उदासीनता, कुंठा, अवसाद, सामाजिक निष्कासन, पुरस्कार से वंचित, कठोर दण्ड, परिणाम से अनभिज्ञ, अस्वस्थ प्रतिस्पर्धा, अक्षमता, और ग्रन्थियों की निष्क्रियता, वयोवृद्धि थकान, मादक द्रव्य व्यसन; विखण्डित परिवार, अपराधी सामाजिक समूह, अत्यधिक गरीबी, अनुचित पालन, उपयुक्त शैक्षणिक एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण की सुविधाओं का अभाव, स्वस्थ मनोरंजनात्मक अवसरों की सुविधाओं की अनुपलब्धता, असहनीय एवं पारिस्थतिक वातावरण जैसे तापक्रम, वायुसंचारण, तीव्र ध्वनि, पेयजल एवं अपर्याप्त या अल्प–भोजन इत्यादि व्यक्ति के शिक्षण में अवरोधक कारण हैं।

स्मृति

जो कुछ पूर्व में सीखा गया उसे याद रखने का कार्य स्मृति करती है। मानसिक प्रक्रिया यथा संवेग, अनुभूति, चिन्तन और कल्पना इस प्रक्रिया में अच्छी तरह सन्निहित हैं। किसी विषय या घटना को सीखने या अनुभव करने के बाद स्मृति की प्रक्रिया प्रारम्भ होती है। आवश्यकतानुसार हम अपने चेतन में इस प्रक्रिया को लाते हैं, स्वीकार करते हैं और अपने प्रतिउत्तरों में व्यक्त करते हैं। ये सभी मानसिक अवस्थाएँ स्मृति प्रदर्शित करती हैं। कुछ मनोवैज्ञानिक यह स्वीकार करते हैं कि स्मृति मनोवैज्ञानिक की अपेक्षा शारीरिक घटना है। इन मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि स्मृति पुनर्जनन प्रक्रिया है। वे लोग जो स्मृति को मनोवैज्ञानिक घटना के रूप में लेते हैं। उनका मानना है कि स्मृति की कुछ निश्चित घटनाएँ आसान और अन्य दुरूह होती हैं।

स्मृति के लिए प्रथम मूल आवश्यक गुण तथ्य एवं घटनाओं को एकत्र करना होता है जो शिक्षण प्रक्रिया के प्रारम्भ में ही सिखाई जाती हैं। सीखने की प्रक्रिया स्मृति की प्रथम आवश्यक प्रक्रिया है। दूसरा तत्व उन तथ्यों एवं घटनाओं को अधिकार में रखना है जो सीखी जा चुकी हैं। यह सीखे गए विषयों का संगठन है, तीसरा तत्व उन तथ्यों एवं घटनाओं का पुनः स्मरण प्रक्रिया के अन्तर्गत लाना जो सीखन के बाद मस्तिष्क में बनी हुई हैं। चौथा तत्व उन तथ्यों एवं घटनाओं को पहचानना जो हमारे मस्तिष्क में सीखने के बाद बनी हैं और सच्चे रूप में उन्हें पुनः स्मरण कर याद रखते हैं।

प्रकार

मनोवैज्ञानिकों ने स्मृति के कई प्रकारों का वर्णन किया है। स्मृति के दो प्रचलित प्रकारों को निम्नलिखित रूप में दिया जा रहा है:

1) पहली श्रेणी मे चार प्रकार की स्मृति आती हैं यथा **(i) संवेदी पटल (ii) अल्पावधिक स्मृति (एस टी एम) (iii) पुनरावृत्ति (iv) दीर्घावधि स्मृति (एल टी एम)।**

संवेदी मार्गों का संग्रहकार्य संवेदी पटल कहलाता है। अधिकांश सूचनाएँ जो संवेदी पटल पर कुछ क्षण के लिए अंकित होती हैं वे विलुप्त हो जाती हैं। जो कुछ संक्षिप्त पटल से संग्रहित होती हैं वे भी सामान्यतः संवेदी पटल से नष्ट हो जाती हैं। हम संवेदी पटल पर सूचनाओं की जानकारी प्राप्त करने के लिए अपना ध्यान आकर्षित करते हैं। जब हम ऐसा करते हैं तो मौजूद सूचना को अग्रिम उपयोग के लिए क्षणिक स्मृति को भेज देते हैं। प्रयोगों द्वारा यह दिखाया गया है कि दृष्टिगत संवेदी पटल एक सेकेण्ड तक सूचनाओं को रोकते हैं। जबकि श्रवण पटल सूचनाओं को लम्बी अवधि तक लगभग 4–5 सेकेण्ड तक रोके रखता है।

अल्वावधि स्मृति वह स्मृति है जो संवेदी पटल से सूचनाओं को ग्रहण करके लगभग 30 सेकेण्ड तक रोके रहती है। रोकने की अवधि कई कारकों पर निर्भर करती है। चूंकि अल्पावधि स्तर की स्मृति की क्षमता बहुत छोटी होती है, और अधिकांश सूचनाएँ जो यहाँ एकत्रित होती हैं वे नष्ट हो जाती हैं। अतः अन्य प्रकार की सूचनाएँ इनका स्थान ग्रहण कर लेती हैं। इनके नष्ट होने से पूर्व कुछ सूचनाएँ पुनः प्राप्त हो जाती हैं और उनका उपयोग हो जाता है। जब हम सूचनाओं के बावत खोज़ करते हैं तो अल्पावधि स्मृति के माध्यम से शीघ्रता से

सूक्ष्म परीक्षण करते हैं। जब हम पुनः इससे किसी प्रकरण को प्राप्त करने का प्रयास करते हैं तो प्रत्येक प्रकरण को अल्पावधि स्मृति में परीक्षण करते हैं। सूक्ष्म परीक्षण की प्रक्रिया जारी रहती है जब तक अल्पावधि स्मृति के सभी प्रकरणों का परीक्षण नहीं हो जाता। अल्पावधि स्मृति की कुछ सूचनाएँ न तो समाप्त होती हैं और न ही पुनः प्राप्त होती है, बल्कि दूसरे स्मृतिस्तर दीर्घावधि स्मृति या उससे

पुनरावृत्ति की प्रक्रिया सूचना के प्रकरणों को एकाग्रता के केन्द्र में रखती हैं, चाहे उन्हें धीरे से दोहराया जाए या जोर से/जितना अधिक पुनरावृत्ति स्मृति की पूरी मात्रा कम महत्वपूर्ण हो सकती है वनिस्पत जिस तरीके से सूचना की पुनरावृत्ति होती है। उसी तरह की प्रक्रिया के बार–बार होने से क्या याद रखना है, उसे दीर्घकालीन स्मृति के रूप में बदलने में सफल नहीं हो पाते हैं। विस्मृत पुनरावृत्ति स्मृति की सफलता अत्याधिक सम्भावी है। विस्तृत पुनरावृत्ति के अन्तर्गत तथ्य, संगठन और अर्थ आदि सन्निहित रहते हैं क्यों कि इनकी पुनरावृत्ति होती रहती है।

दीर्घकालिक स्मृति कई दिनों, महीनों, वर्षों या जिन्दगी भर बनी रहती है। इसके भण्डारण क्षमता का कोई ज्ञात समय नहीं है। एक बार दीर्घकालिक स्मृति में सूचना इकट्ठा हो गई तो उसके लिए यह अच्छा है।

हमें ऐसा प्रतीत होता है कि हम भूल रहे हैं, क्योंकि जो स्मृति में संचय है अथवा अतिरिक्त सूचनायें पुनः प्राप्त होती हैं उन्हें याद रखने मे कठिनाई महसूस होती है। कई चीजों की जानकारी हो जाने से हम उन्हें भूल जाते हैं क्योंकि ये भ्रम और बाधा उत्पन्न करती हैं और उन्हें दीर्घकालिक स्मृति में छोड़ देती हैं। दीर्घकालिक स्मृति में शब्दों, वाक्यों, विचारों, अवधारणाओं और जीवन के अनुभवों का भण्डारण होता है।

स्मृति की दूसरी श्रेणी भी चार प्रकार की होती हैं यथा **(i) स्वभाव स्मृति (ii) सत्य स्मृति (iii) तात्कालिक स्मृति (iv) दीर्घावधि स्मृति।**

स्वभाव स्मृति – बिना सोचे समझे किसी विषय पर टिप्पणी करने पर निर्भर रहती है। इस स्मृति में हम सोचने या तर्क करने के आधार पर याद करने की प्रक्रिया का प्रयोग नहीं करते हैं। इस प्रकार की स्मृति मानसिक स्मृति की अपेक्षा शारीरिक स्मृति मानी जाती है, जिसके लिए वृद्धि और वास्तविकता का कोई स्थान नहीं होता है।

सत्य स्मृति – स्वभाव स्मृति से ठीक विपरीत होती है। इस स्मृति के अन्तर्गत हम विषय की बात को अच्छी तरह समझकर ही अपनी स्मृति में लाते हैं। सत्य स्मृति में

याद रखने की प्रक्रिया सोच एवं तर्क पर आधारित होती है। यह सही मायने में बुद्धि और वास्तविकता के लिए मानसिक स्मृति है। कुछ मनोवैज्ञानिक स्मृति के शारीरिक एवं मानसिक आधार पर वर्गीकरण से सहमत नहीं हैं और उनके सम्बन्धों के पक्ष में वकालत करते हैं।

जब किसी विषय के बारे में तत्काल देख और सुनकर दोहराते हैं, तो उसे तात्कालिक स्मृति कहते हैं। तात्कालिक स्मृति, दीर्घकालिक स्मृति से भिन्न होती है। तात्कालिक स्मृति अस्थाई होती है। अध्ययन यह बतलाते हैं कि तात्कालिक स्मृति अवस्था के साथ–साथ विकसित होती है। यह किशोरावस्था में तेज़ी से विकसित होती है।

तात्कालिक स्मृति के परिणाम को शब्दों और अत्यधिक संख्याओं के आधार पर जाना जा सकता है। तात्कालिक स्मृति, स्मृति विस्तार का संकेत करती है और यह स्मृति विस्तार दृष्टि और श्रवण से सम्बन्धित हो सकती है। जब शब्दों और संख्याओं को दिखाया जाता है तब तात्कालिक स्मृति को तात्कालिक श्रवण विस्तार स्मृति कहते हैं।

दीर्घावधि स्मृति तात्कालिक स्मृति के विपरीत होती है और इसकी प्रकृति वहनीय होती है। दीर्घावधि स्मृति में हम सीखी हुई बातों को पुनः एक निश्चित अंतराल के बाद उद्देश्यों की पूर्ति के लिए करते हैं। परीक्षा से पूर्व पाठ याद करना और परीक्षा के समय उन्हें समझने के बाद उत्तरपुस्तिका में लिखना दीर्घावधि स्मृति का रूप है।

अवबोधन

अवबोधन वह संगठित प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम वस्तुओं को उनके सही नामों से पहचानते हैं, जैसे वृक्षों, व्यक्तियों, इमारतों, मशीनों आदि। अवबोधन को जोड़ने वाली मशीन के रूप में संचालिक नही किया जा सकता है। प्रभाव को संचित नहीं किया जा सकता है; वस्तुतः मस्तिष्क उसी की व्याख्या और आकलन करता है जो वह ग्रहण करता है। किसी भी तस्वीर में हम वही चीज हूबहू नहीं देखते; और एक ही घटना को आयु, यौन एवं बुद्धि और अनुभव आदि के आधार पर हम भिन्न–भिन्न तरीके से वर्णन करते हैं। इस आधार पर प्रायः संवेदना और अनुभूति के बीच अन्तर किया जाता है कि संवेदना ज्ञानेन्द्रियों का प्रथम प्रतिउत्तर है जबकि अवबोधन उद्दीप्त वस्तु की अर्थपूर्ण जानकारी है। यह भिन्नता सैद्धान्तिक मूल्य के साथ व्यावहारिक मूल्य में बहुत कम है। संवेदना और अवबोधन की प्रक्रिया को अनुभव से अलग नहीं किया जा सकता है। हम शुद्ध रूप से रंग की संवेदना या ध्वनि के स्वरूप को वस्तुओं एवं अन्य अनुभवों के संयोजन से अलग नहीं कर सकते हैं। यदि कोई आगरा के ताजमहल का

वर्णन करता है तो उस इमारत की दृष्टिगत कल्पना के साथ संभवतः वहीं की देखती हुई वस्तुओं की यादें जुड़ी होंगी। दवा की गंध अस्पताल के वार्ड की याद दिलाती है तथा मिठाई का स्वाद किसी स्वादिष्ट रात्रि भोज के रोचक अनुभव की याद मस्तिष्क में आ सकती है। क्रिकेट शब्द के प्रतिउत्तर में अधिकांश लोगों के विवरण की अनुभूति से लगता है कि वे गेंद फेंक रहे हैं या बल्लेबाजी कर रहे हैं। ऐसे मामलों में अवबोधन कल्पना से कुछ भिन्न होता है। वास्तव में कल्पना सही रूप में अवबोधन है, जिसमें बहु काम संवेदी नियंत्रण होता है। अवबोधन पूर्वकल्पित अन्तिम प्रतिउत्तर की मध्यस्थ प्रक्रिया है। जो कुछ हम देखते हैं वह आंशिक रूप से प्रति उद्दीपन एवं अधिकांश मात्रा में अपने आप पर निर्भर करता है, ताकि अवबोधन पूर्वकाल के अनुभव के आलोक में वर्तमान परिस्थितियों का आंकलन शक्ति बन सके।

अवबोधन की प्रमुख विशेषताएँ

भावना एवं संवेग की एकता तथा संगठन; ध्यान और चयन; दृढता एवं स्थिरीकरण; शिक्षण एवं पूर्व अनुभव आदि है। ध्यान अवबोधन से अधिक महत्वपूर्ण है और उसके चरित्र को निर्धारित करता है। ध्यान पर्यावरण से आदान प्रदान की प्रक्रिया है। यह एक सक्रिय व्यवहार है। जब हमारे ज्ञानेन्द्रियों की सक्रियता कुछ निर्धारित उद्दीपन द्वारा केन्द्रित की जाती है तो यह माना जाता है कि हम सतर्क हैं। उदारहण स्वरूप गलियों में आवाज़ों का होना, मौसम में परिवर्तन, क्रिकेट मैच, व्याख्यान आदि।

अवबोधन आन्तरिक वैयक्तिक दशाओं और बाह्य सामाजिक स्थितियों द्वारा निर्धारित होता है। प्रेरणाएँ, संवेग, घनिष्ठता, मनोवृत्ति, मूल्य समायोजन आदि प्रमुख आन्तरिक कारक हैं जो अवबोधन को प्रभावित करते हैं। कई बाहरी या उद्दीपन की विभिन्न विशेषताएँ अवबोधन से अलग होती हैं। उद्दीपन का संगठन; उद्दीपन में समानांताएँ; उद्दीपन में निकटता, तत्वों के आँकड़े एवं संदर्भ अवबोधनों को प्रभावित करते हैं। किसी अन्य अथवा एक समूह की उपस्थिति उसके निर्देशानुसार अवबोधन को प्रभावित करता है।

प्रकार

अवबोधन के दो मुख्य प्रकार हैं:– (i) **गहरा अवबोधन** (ii) **गति अवबोधन**

गहरा अवबोधन रैखिक विचार, स्पष्टता, अन्तःप्रवेशन, प्रतिबिम्ब की बनावट में उतार–चढ़ाव और वस्तुओं की गतिशीलता से सम्बन्धित स्थिर बिन्दु के पास या उससे दूर होता है। गति अवबोधन गति के प्रकार से जुड़ा होता है (i) प्रत्यक्ष गति और (ii) वास्तविक गति। प्रत्यक्ष गति स्वगति मूलक या परिप्रेरित हो सकता है।

सामाजिक अवबोधन

सामाजिक सामाजिक संज्ञान का एक विषयात्मक मामला है। दूसरों के विषय में हमारा सामाजिक अवबोधन मूलतः उसे विषय में प्राप्त सूचनाओं तथा गुणों पर आधारित होता है तथा हम उनके व्यवहार के कारणों की व्याख्या करते हैं। हमारे सामाजिक अवबोधन की जड़ दूसरों के विषय में हमारे अवलोकन में होता है; विशेष स्थितियों में उनके शारीरिक विशेषताओं एवं व्यवहारों के अवलोकन से होता है। हमारा अवलोकन वे सूचनाएँ–प्रदान करता है जो अर्थपूर्ण विशेषताओं में हमारे संज्ञानात्मक ढाँचे द्वारा आन्तरित होता है। सबसे निचले स्तर पर इस प्रक्रिया में सूचनाओं को हमारे संज्ञानात्मक श्रेणियाँ जो अन्य श्रेणियों से सम्बन्धित हैं यही स्थान देने का कार्य होता है। हम न्यूनतम आँकड़ों से सरल गुण बना सकते हैं या इसे अधिक सूचनाओं के क्रम से जोड़कर एक पूर्ण धारणा बना सकते हैं। हम अन्य व्यक्तियों के साथ–साथ अपने स्वयं के व्यवहार के कारणों के बारे में अनुमान लगा सकते हैं इस प्रक्रिया के कार्य की सरलता के बावजूद इसकी दूसरे अन्य अवलोकनों से तुलना या यथार्थता की गारन्टी नहीं होती है। समाजिक अवबोधन की प्रक्रियाएँ निर्धारित करता है कि हम दूसरों के साथ किस प्रकार की प्रतिक्रिया करते हैं। तथा हम किस प्रकार अपने आप को देखते है। अन्य लोगों की धारणा निर्माण की प्रक्रिया को संज्ञानात्म ढाँचा और सरल बना देता है। आत्म गुण निर्माण की प्रक्रिया में बहुत से ऐसे कारक हैं जो दूसरों के गुणों के निर्माण में महत्वपूर्ण होते हैं, भी अपनी भूमिका का निर्वाह करते हैं। सामाजिक सहस्ता शक्तिशाली प्रत्युत्तर की स्थिति में सबसे जल्दी घटित होती है अब दूसरों की उपस्थिति ही प्रेरणादायक होती हैं। अनुरूपता का दबाव ऐसी स्थिति निर्मित कर सकता है जब व्यक्तिगत माध्यम से प्राप्त सूचना तथा सामाजिक माध्यम से प्राप्त सूचना में संघर्ष हो सकता है।

रूढ़िबद्ध

रूढिबद्ध अति सरलित विचारों या विश्वासों का एक निश्चित सेट है जो सामान्यतया लोगों या समूह के सदस्यों द्वारा रखा जाता है। हमारे विभिन्न धार्मिक, आध्यात्मिक या लैंगिक समूहों के विषय में रूढ़िबद्धताएँ होती हैं कुछ लोगों के रूढ़िगत विचार कुछ निश्चित शारीरिक पक्षों को इंगित करता है जैसे लम्बी और सुराहीदार गर्दन वाली महिला को एक सुन्दर महिला के रूप में देखा जाता है या एक लम्बे काले तथा चौड़े कन्धे वाले व्यक्ति को एक क्रूर व्यक्ति माना जाता है। रूढ़िगत विचार एक समूह के

सदस्यों का अत्यधिक सामान्यीकृत विश्वास होता है। ये विचार कुछ उद्देश्यों या कुछ अवलोकित घटनाओं पर आधारित होते हैं। इसे ऐसी अवधाराणा जो गलत श्रेणीकरण का कारण होती है तथा पसन्द एवं नापसन्द, स्वीकृति या अस्वीकृति की भावना के रूप में माना जाता है। रूढ़िबद्ध एक प्रकार का वर्गीकरण है जिसमें तीन गुण होते हैं (i) लोग कुछ विशेष गुण धर्म के अनुसार व्यक्तियों की एक श्रेणी की पहचान करते हैं, (ii) लोग व्यक्तियों के श्रेणी के अनुसार गुणों की निश्चित विशेषताओं या लक्षणों पर एकमत होते हैं, (iii) उस श्रेणी के किसी व्यक्ति के गुण को स्वीकार करते हैं।

रूढ़ियों की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

i) रूढ़िबद्धताएँ एक मानसिक आकृति या छाप होती है। रूढ़िबद्धताएँ एक वर्ग या समूह का मानसिक चित्र होता है जिसके आधार पर हम उस समूह के सदस्यों की विशेषताओं को स्वीकार करते हैं।

ii) रूढ़िवादिता व्यक्तियों के एक समूह के विषय में बड़े स्तर पर सहमत विश्वास भी होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति का एक विश्वास होता है कि शिक्षक आदर्शवादी होते हैं, राजनीतिज्ञ अवसरवादी होते हैं।

iii) रूढ़िवादिता में शोक एवं अतिरंजित सामान्यीकरण होता है। इसका विकास किसी समूह के कुछ लोगों के साथ अनुभव के आधार पर होता है।

iv) सामन्यता रूढ़िबद्धताओं में किसी प्रकार का परिवर्तन नही होता है। इनमें नवीन सूचनाओं या विरोधाभाषी सूचनाओं के बावजूद भी परिवर्तन नहीं होता।

v) रूढ़ियाँ यों तो सकारात्मक या नकारात्मक हो सकती हैं। यह पूर्वाग्रह से सम्बन्धित होती हैं।

रूढ़िबद्धताएँ स्वाभाविक न होकर प्राप्त की हुई होती है। रूढ़ियों के निर्माण के लिए उत्तरदायी कारक हैं (i) आंशिका अनुभव एवं ज्ञान (ii) समाजीकरण (iii) सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारक (iv) अनुकरण तथा (v) परम्परा एवं लोकोक्तियाँ।

रूढ़ियाँ सामाजिक जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वैसे वे हमारे सामाजिक अन्तर्क्रियाओं को प्रभावित करती हैं। इसके आधार पर हम अन्य लोगों का मूल्यांकन करते हैं तथा अपने सामाजिक अन्तर्क्रियाओं का निर्माण करते हैं। रूढ़िबद्धताओं का प्रमुख कार्य (i) सामाजिक व्यवहारों को अर्थपूर्ण बनाना (ii) सामाजिक व्यवहारों को

नियन्त्रित करना (iii) सामाजिक व्यवहारों का पूर्वकथन तथा (iv) वाणिज्यिक सूचना में हमारी सहायता करना। रूढ़िबद्धताएँ हमारे सामाजिक अन्तर्क्रियाओं को प्रभावित करने के साथ ही हमारे कार्यों में हस्तक्षेप भी करती है।

अभिप्रेरणा

अभिप्रेरणा से तात्पर्य प्रेरक एवं आगे बढ़ाने वाली शक्तियों से है जिसके परिणामस्वरूप लक्ष्य निर्देशित व्यवहार होता है। व्यवहार के अवलोकन द्वारा प्रेरकों का अनुमान लग जाता है। प्रेरक व्यवहार के व्याख्या के लिए शक्तिशाली उपकरण है तथा ये हमें भविष्य के व्यवहार के विषय में पूर्वकथन करने के अनुमति प्रदान करते हैं।

मानव की शारीरिक आवश्यकताएँ जैसे – भूख, प्यास, काम, आराम आदि मूल आवश्यकताएँ हैं तथा ये आनुवंशिक होती हैं। मानव द्वारा जनित आन्तरिक उर्ज़ा जो शारीरिक आवश्यकताओं की संतुष्टि की विभिन्न क्रियाओं के रूप में होती हैं तथा व्यक्ति को अपने लक्ष्यों की पूर्ति में सहायता करती है; को अभिप्रेरित कहते हैं।

अभिप्रेरणा के सिद्धान्तों में अभिप्रेरित सिद्धान्त, प्रोत्साहन सिद्धान्त, प्रतिद्वन्द्विता सिद्धान्त तथा पर्याप्तता सिद्धान्त सम्मिलित हैं। अभिप्रेरित सिद्धान्तों में कहा गया है कि व्यवहार को लक्ष्य की ओर व्यक्ति के अन्तर की आन्तरिक स्थिति द्वारा ही ढकेला जाता है प्रोत्साहन सिद्धान्तों में व्यवहार को अपनी ओर प्रभावित कर लक्ष्य की क्षमता पर जोर दिया गया है। प्रतिद्वन्द्विता प्रक्रिया सिद्धान्त में कहा गया है कि हमें उन लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु प्रेरित होते हैं। जो हमें सुखद संवेगात्मक भावनाएँ देती हैं तथा उन लक्ष्यों से बचने का प्रयास करते हैं जो हमे दुख पहुँचाती हैं। इस सिद्धान्त में यह भी कहा गया है कि कई संवेगात्मक प्रेरक स्थितियों के बाद विरोधी स्थितियों या विरोध प्रकट होते हैं। पर्याप्त स्तर सिद्धान्तों में कहा जाता है कि व्यवहार आन्तरिक दैहिक प्रतिभाओं में एक संतुलन की स्थिति उत्पन्न करने का पर्याप्त स्तर की प्राप्ति की ओर निर्देशित होता है। जैविकीय प्रेरक जैसे – भूख, प्यास तथा काम की उत्पत्ति शरीर के मनोवैज्ञानिक स्तरों से होती है। ये प्रेरक शारीरिक प्रक्रियाओं के संतुलित स्तर में बाधा आने से या संवेदी उद्दीपकों से उत्पन्न हो सकते हैं। भूख प्रेरक का आरम्भ तब हो सकता है रक्त का स्तर या पोषक तत्वों का स्तर एक निश्चित आवश्यकता के स्तर से नीचे आ जाता है।

काम (यौनक्रिया) प्रेरणा एक बृहत स्तर में काम हारमोनों पर निर्भर करती है। ये हारमोन विकासात्मक अवस्थाओं में मस्तिष्क एवं शरीर को संगठित करते हैं ताकि उनमें पुरुष एवं स्त्रीत्व के गुण आ सकें। मानव में काम प्रेरणा की सक्रियता पर नियन्त्रण काम हारमोनों की तुलना में बाह्य उद्दीपन एवं शिक्षण द्वारा अधिक किया जा सकता है। नींद तापमान के साथ तथा पर्यावरणीय स्थितियों के साथ समायोजन दर्द या कष्टदायक तथा बाह्य दबावों से स्वतंत्रता दैहिक प्रेरणा के अन्य स्वरूप हैं।

सामाजिक प्रेरक या अर्जित प्रेरक जैसे उपलब्धि की आवाश्कता, शक्ति की आवश्यकता तथा अत्यधिक मानवीय आवश्यकता आदि अर्जित किए हुए प्रेरक होते हैं। उपलब्धि की आवश्यकता ऐसा प्रेरक है जो किसी लक्ष्य की सफलतापूर्वक पूर्ति के लिए होती है। जिन लोगों को उच्च उपलब्धि की आकांक्षा होती है वे कुछ ऐसे कार्य जो चुनौती पूर्ण एवं खतरा उठाने वाले हों, जिनमें सफलता प्राप्ति की संभावना होती है तथा ऐसे कार्य जिसमें उनके प्रदर्शन का अन्य लोगों के साथ तुलना की जाती है, करते हैं। वह अपने कार्य के प्रति बहुत लगनशील होते हैं। जब वे सफल होते हैं तो और अधिक चुनौतीपूर्ण कार्य करते हैं और ऐसी परिस्थितियों में कार्य करना पसन्द करते हैं जिसमे परिणाम पर उनका कुछ नियन्त्रण हो। कुछ महिलाएँ जो उच्च उपलब्धि की आकांक्षा रखती हैं वे उपर्युक्त व्यवहार की विशेषताओं को प्रदर्शित नहीं करती हैं। किसी समाज में उपलब्धि अभिप्रेरणा का स्तर कभी–कभी उसके विकास से भी सम्बन्धित होता है।

शक्ति अभिप्रेरणा एक सामाजिक प्रेरक है जिसका लक्ष्य अपनी प्रतिष्ठा या स्थिति बढ़ाना, दूसरों को प्रभावित करना, नियन्त्रित करना, नेतृत्व करना होता है। शक्ति अभिप्रेरणा का व्यावहारिक प्रकटन विभिन्न स्वरूपों में होता है। इनमें आक्रमण एवं उत्तेजक क्रिया, प्रतिस्पर्धात्मक खेलों में भाग लेना, संगठनों का सदस्य होना, विशिष्ट स्थानों की प्राप्ति तथा ऐसे व्यवसाय का चयन करना जिसका दूसरों पर गहरा प्रभाव हो, आदि लोकप्रिय हैं। पुरुषों में यह मद्यपान तथा महिलाओं पर लैंगिक प्रभाव के रूप में भी होता है। शक्ति अभिप्रेरणा का एक विशिष्टस्वरूप होता है। कुछ व्यक्तियों में ऐसी विशेषताएँ होती हैं कि वह उसका उपयोग दूसरों का विविध प्रकार से शोषित करने में करता है। वहशी आक्रामकता वह व्यवहार होता है जिसमें व्यक्ति का उद्देश्य दूसरे व्यक्ति को नुकसान पहुचाना ही होता है। वहशी आक्रामकता के पर्यावरणीय एवं सामाजिक कारणों में कुण्ठा, सामाजिक दशाओं के कारण समस्याएँ तथा दुखदायी पर्यावरणीय स्थितियाँ जैसे उच्च तापमान, शोर, भीड़ आदि हैं। सामाजिक शिक्षण,

नैमित्तक एवं उपकरणात्मक अनुबन्धन के द्वारा ही दूसरों के विरूद्ध आक्रामकता की प्रवृत्ति को सीखा जा सकता है। कुछ परिस्थितियों में दण्ड गैर आक्रामक माडलों की उपस्थिति या आक्रामकता के साथ प्रतिद्वन्द्विता न कर पाने वाले प्रत्युत्तरों द्वारा भी आक्रामक व्यवहार सीखे जाते हैं।

अभिप्रेरणा का प्रक्रम बहुत सरल ढंग से नहीं चलता है। बहुत सी ऐसी घटनाएँ घटित होती हैं। जो हमें उन लक्ष्यों की प्राप्ति से रोकती है जिसकी ओर हमारी इच्छा होती है। कुण्ठा शब्द से तात्पर्य व्यवहार पर रोक से है जो लक्ष्य प्राप्ति की ओर निर्देशित है। बहुत से ऐसे तरीके हैं जिसमें प्रेरक कुण्ठित कर सकते हैं। एक साथ उत्पन्न प्रेरकों में संघर्ष सबसे महत्वपूर्ण कारण है जिससे लक्ष्य प्राप्ति नहीं होता है। यदि प्रेरकों को रोक दिया जाए तो सांवेगिक भावनाएँ एवं व्यवहार प्रभावित होते हैं।

वह व्यक्ति जो अपने लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर पाता है, वह भयाक्रान्त, चिन्तित, क्रोधी या अपराध भाव वाला या अवसादी हो जाता है। वह जीवन से प्रसन्नता ढूँढ पाने में असमर्थ हो जाता है। कुण्ठा के बहुत से स्रोत हैं। इनमें प्रेरकों की पूर्ति को बांधित करने वाले पर्यावरणीय शक्तियाँ व्यक्तिगत अपर्याप्तता जो लक्ष्य की पूर्ति को असम्भव बना देती हैं तथा प्रेरकों में संघर्ष आदि। यहाँ जिक्र करने योग्य हैं पर्यावरणीय कुण्ठा शारीरिक बाधा या अवरोध जैसे धन का अभाव, बन्द दरवाज़े या लोग (माता–पिता, शिक्षक, पुलिस, अधिकारी आदि) जो लक्ष्य प्राप्ति से रोकते हैं।

वे वाहक जो एक व्यक्ति के मानसिक एवं सामाजिक वृद्धि या विकास को प्रभावित करते हैं उसके अभिप्रेरणा को भी प्रभावित करते हैं। उचित आनुवांशिक विशेषताएँ, भोजन, वातावरणीय स्थितियों, सहयोगपूर्ण सामाजिक पर्यावरण आदि स्वास्थ अभिप्रेरणा विकसित करने में सहायक होते हैं। अपर्याप्त आनुवांशिक तत्व, कुपोषण साम्प्रदायिक / आपराधिक या असंगठित सामाजिक समूह स्वस्थ प्रेरणा में बाधक कारण होते हैं।

सारांश

इस अध्याय **में हमने मानव व्यवहार के कुछ मूल मनोवैज्ञानिक अवधारणाओं के बारे में जानकारी प्राप्त की यथा–अभिवृत्ति, मूल्य, पूर्वाग्रह, शिक्षण स्मृति, अवबोधक, रूढ़ियाँ। अभिवृत्ति एक काल्पनिक रचना है जो मुनष्य के व्यवहार से प्रभावित होती है जब वह अभिवृत्ति से सम्बन्धित वस्तुओं और स्थितियों को नियंत्रित करती है। अभिवृत्ति के तीन**

भाग होते हैं। (i) भावात्मक घटक (अभिवृत्ति उद्देश्य को व्यक्ति कितना अधिक पसन्द अथवा नापसन्द करता है) (ii) सज्ञानात्मक (चिन्तन, स्मृति अधिगम और निर्णय) घटक (अभिवृत्ति उद्देश्य के बारे में व्यक्ति क्या विश्वास करता है) (iii) व्यवहार वादी घटक (अभिवृत्ति उद्देश्य के प्रति व्यक्ति कैसे कार्य सम्पादित करता है)।

किसी भी चीज का मूल्य व्यक्ति के लिए वांछनीय हो सकता है। व्यक्ति के निश्चित मूल्य उसे पूर्वानुमान की तरफ निर्देशित करता है जिसमें वह जीवित रहता है। मूल्यों का अभिप्रेरणात्मक स्वरूप होता है; क्योंकि यह आवश्यकता के अभाव के अनुरूप होता है। मूल्यों के दो स्वरूप समूह के लिए सार्वभौम तथा व्यक्ति के लिए विशिष्ट होते हैं।

पूर्वाग्रह एक अभिवृत्ति है जो व्यक्ति को समूह या उसके सदस्यों के संदर्भ में उपयुक्त अनुप्रयुक्त तरीके से सोचने, देखने, महसूस करने तथा कार्य सम्पादन करने की तरफ उन्मुख करती है।

शिक्षण वह प्रक्रिया है जो शारीरिक एवं मानसिक क्रिया के निर्देशन के परिणामस्वरूप नए या परिवर्तित प्रत्युत्तरों की तरफ ले जाती है। शिक्षण के लिए पूर्ववर्ती सामान्य दशा आवश्यकता की स्थिति या उच्च अभिप्रेरणा है।

उचित प्रतिउत्तर के अन्तिम चुनाव के लिए, शिक्षण परीक्षण और भूल के सिद्धान्त की ओर अग्रसर होता है। शिक्षण अक्सर चिन्तन की वह प्रक्रिया है जो प्रशिक्षण और अनुभव के परिणामस्वरूप नये परिवर्तित प्रतिउत्तर की तरफ ले जाती है। स्मृति पूर्व सीखी गयी बातों को याद रखती है। स्मृति से किसी घटना या तथ्यों की जानकारी होती है जिससे उस बीच जो पूर्व के विचार या अनुभव थे, उसके बारे में हमें सोचने के लिए अतिरिक्त चेतना की आवश्यकता नही पड़ती।

अनुभूति वह संगठित प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम वस्तुओं की सही पहचान करते हैं जैसे वृक्षों, व्यक्तियों, मकानों, मशीनों या इसी तरह की अन्य वस्तुओं की। सामाजिक अनुभूति सामाजिक ज्ञान की विषय वस्तु है। दूसरों के बारे में हमारी सामाजिक अनुभूति मूलरूप से उन सूचनाओं पर आधारित होती है जो हम उनसे निष्कर्ष के रूप में प्राप्त करते हैं और उनके व्यवहार को उन कारणों के लिए उत्तरदायी मानते हैं। सामाजिक अनुभूति दूसरों के अवलोकन पर आधारित होती है।

अनुभूति सामाजिक ज्ञान की विषय वस्तु है। दूसरों के बारे में हमारी सामाजिक अनुभूति मूलरूप से उन सूचनाओं पर आधारित होती है जो हम उनसे निष्कर्ष के रूप में प्राप्त करते हैं और उनके व्यवहार को उन कारणों के लिए उत्तरदायी मानते हैं। सामाजिक अनुभूति दूसरों के अवलोकन पर आधारित होती है।

रूढ़िगतविचार एक निश्चित विश्वास या भाव है जो समूह के सदस्यों एवं लोगों में होती है। प्रेरणा चालन एवं आकर्षण वाली शक्तियों की तरफ आकर्षित होती है जिसके परिणामस्वरूप स्थायी व्यवहार व्यक्ति को निश्चित लक्ष्य की ओर निर्देशित करता है। प्रेरणाओं व्यवहार के निरीक्षण का परिणाम हैं।

कुछ उपयोगी पुस्तकें

वैरोन आर. ए. एवं वैर्न डी. बी. (1987), *सोसलसाइकोलाजी,* संस्करण, प्रेन्टिसहाल (भारत) नई दिल्ली।

क्लिफोर्ड टी. मोर्गन रिचर्ड ए. किंग, जोह्न आर. विज, जोह्न स्कॉपल *इन्ट्रोडक्सन टू साइकोलाजी* 11 वां पुनः मद्रण, 1999 टाटा मैकग्रा हिल पब्लिशिंग कं. लि. नई दिल्ली।

हेनरी ई. गारनेट – *जनरल साइकोलाजी,* द्वितीय संस्करण प्रतिवेदन (1998) इउरेसिया पल्बिशिंग हाऊस प्रा. लि. रामनगर, नई दिल्ली।

सुप्रीत पालीवाल – *सोसलसाइकोलाजी,* प्रथमवार छपी 2002 आर वी. एस. ए. पब्लिशिंग, एसराम एस राजमार्ग, जयपुर।

जिम्वारडो पी. जी. एवं वेवर, ए. एल. (1997) *मनोविज्ञान,* हार्पर कोलिन्स कालेज पब्लिशिंग न्यूयार्क।